विश्ववारात्रेयी।अग्निः। १, ३ त्रिष्टुप्, २ जगती, ४ अनुष्टुप्, ५-६ गायत्री

सिमद्धो अग्निर्दिवि शोचिर्रश्रेत्प्रत्यङ्कुषसंमुर्विया वि भीति। एति प्राची विश्ववीरा नमोभिर्देवाँ ईळीना ह्विषी घृताची॥ ५.०२८.०१

अग्निः- पावकः सत्क्रतुः। सिमद्धः- सम्यगुद्दीपितः। दिवि- नभिस चित्ताकाश इत्याध्यात्मिके। शोचिः- प्रकाशम्। अश्रेत्- आश्रयित। उर्विया- विस्तृतया स्वशक्त्या। प्रत्युषसम्- प्रभात्यिभमुखो विद्याभिमुखः। वि भाति- विद्योतते। देवान्। हिवषा- हृव्यसमर्पणेन। ईळाना- स्तुवती। घृताची- ज्योतिर्मयी। विश्ववारा- सर्वैर्वरणीया। प्राची- उषा विद्या। नमोभिः- नमस्कारैः। एति- गच्छित॥१॥

समिध्यमानो अमृतस्य राजिस ह्विष्कृण्वन्तं सचसे स्वस्तये।

विश्वं स धत्ते द्रविणं यमिन्वस्यातिथ्यमेग्ने नि च धत्त इत्पुरः॥ ५.०२८.०२

समिध्यमानः- सम्यगुद्दीपितः। अमृतस्य- अमृतस्वम्। राजसि- ईशिषे। हविष्कृण्वन्तम्-यजमानम्। स्वस्तये- तस्य क्षेमाय। सचसे- सङ्गच्छिस। यम्। इन्वसि- त्वं व्याप्नोषि। सः। विश्वम्- सर्वाम्। द्रविणम्- सम्पदम्। धत्ते- धारयित। अग्ने। पुरः- प्रत्यक्षतः। सः। आतिथ्यम्-भवदाितथ्यम्। नि धत्ते च ॥२॥

अय्रे शर्धे मह्ते सौर्भगाय तर्व सुम्नान्युत्तमानि सन्तु।

सं जिस्पत्यं सुयममा कृणुष्व शत्रूयताम्भि तिष्ठा महाँसि॥ ५.०२८.०३

अग्ने। शर्ध- बलवन्। महते। सौभगाय- सौभाग्याय। तव- ते। द्युम्नानि- दीप्तयः। उत्तमानि-श्रेष्ठाः। सन्तु- भवन्तु। जास्पत्यम्- त्वदुपासकं दाम्पत्यम्। सुयमम्- सुष्ठु नियमितम्। सम्-सम्यक्। आ- आभिमुख्येन। कृणुष्व- कुरु। शत्रूयताम्- शत्रूणाम्। महांसि- महान्ति वीर्याणि। अभि तिष्ठ- अभिभव॥३॥ सिमद्धस्य प्रमह्सोऽग्ने वन्दे तव श्रियम्। वृष्भो चुम्नवाँ असि समध्वरेष्विध्यसे॥ ५.०२८.०४ सिमद्धस्य- सम्यगुद्दीपितस्य। प्रमहसः- महात्मनः। तव- ते। अग्ने। श्रियम्- लक्ष्मीम्। वन्दे- स्तौमि नमामि च। वृषभः- वर्षकः। चुम्नवान्- तेजस्वी। असि- भवसि। समध्वरेषु- ध्वररहितकर्मसु। इध्यसे- सम्यगुद्दीपितोसि॥४॥

समिद्धो अग्न आहुत देवान्यक्षि स्वध्वर।त्वं हि हेव्यवाळसि॥ ५.०२८.०५

सिमद्धः- सम्यगुद्दीपितः। अग्ने। आहुत- साधकैराहूत। देवान्। यक्षि- यज। स्वध्वर-शोभनध्वरिवरोधिकर्मवन्। त्वम्। हि- खलु। हव्यवाट्- हव्यवाहकः। असि- भवसि॥५॥

आ जुंहोता दुवस्यता्प्रिं प्रयत्यध्वरे।वृणीध्वं हेव्यवाहेनम्॥ ५.०२८.०६ अध्वरे- यज्ञे। प्रयति- प्रवृत्ते। अग्निम्। आ- समन्तात्। जुहोत। दुवस्यत- परिचरत। हव्यवाहनम्- चरुपुरोडाशध्यानभावनादिहव्यवाहम्। वृणीध्वम्- वरणं कुरुत ॥६॥